

दया बनाम क्षमा - ब.कु. गंगाधर



कहा गया है कि 'दया' धर्म का मूल है और पाप का मूल 'अभिमान' है। अब जब आदि कहीं धर्म की पुनर्स्थापना हो रही है तो सर्वश्रेष्ठ 'दया' की भी पुनः स्थापना हो रही होगी। यदि 'दया' धर्म का मूल है तो हमें जानना चाहिये कि 'दया' का वास्तविक स्वरूप क्या है। परमात्मा की महिमा करते हुए भी भक्तजन प्रायः कहते हैं कि - 'हे प्रभो, हम पर दया करो, हम जन्म-जन्म के अपराधी हैं। आप तो क्षमा के भण्डार हैं, क्षमा करो, प्रभो !''

तो क्या हम अपराध (पाप) करते रहें और परमात्मा हम पर दया करते रहेंगे ? हम विवेक-विमुख होकर विकर्म करते रहें और परमात्मा हम पर क्षमा वर्षा करते रहेंगे ? क्या परमात्मा ऐसी दया करते हैं कि हर आये दिन हम फिर दया के लिये प्रार्थना करते रहें और परमात्मा हमें क्षमा ही करते रहें ? परमात्मा का कार्य तो स्थायी परिणाम वाला होना चाहिये। अतः उनके द्वारा दया भी ऐसी तो नहीं होनी चाहिये कि टिकाऊ काम न हो। विचार करने पर आप मानेंगे कि सबसे श्रेष्ठ दया तो यह है कि मनुष्य दीर्घ-काल के लिये निर्धनता, रोग, आपदा, वैर-विरोध, कलह-कलेश, दुःख-दरिद्रता, शोक-शिशिलता, संघर्ष-समस्याओं इत्यादि से मुक्त हो। परन्तु इस विषय में सोचने की बात यह है कि ये सभी दुःख, पीड़ाएँ और मानसिक यातनाएँ तो मनुष्य के अपने ही कर्मों का फल हुआ करती हैं। अतः जब तक मनुष्य के अपने ही कर्म श्रेष्ठ न बनें और पूर्व काल में किये हुए विकर्म दम-बीज न हों और इस क्षण से लेकर आगे के लिये मनोविकार नष्ट न हों तब तक तो इन भोगनाओं से मुक्ति नहीं हो सकती। अतः निष्कर्ष यह हुआ कि परमात्मा हमें पतित से पावन और विकारी से निर्विकारी बनाने का जो ईश्वरीय कार्य करते हैं, वही

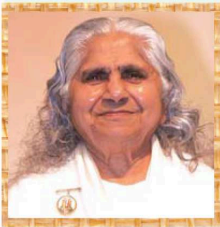
क्षमा करने से अपना ही मन हल्का होगा। क्षमा करना बड़प्पन है, वीरता है, किसी आत्मा के उद्धार की एक विधि है।

उनकी विशेष दयालुता है। इस कार्य को पूरा करने में वे मनुष्यता का अवगुणों या दुर्गुणों इत्यादि के कारण उससे घृणा नहीं करते, न रूष्ट होते हैं बल्कि अत्यन्त प्रेम भाव से तथा करुणा से उसमें से छोटें-बड़े सभी विकारों एवं पापों के काँटे निकालते हैं। वे फटकार नहीं देते, दुलार देते हैं। वे धक्का या धिक्कार नहीं देते

बल्कि दया और उपकार करते हैं। अतः हम जो उस महानतम धर्म की पुनर्स्थापना में लगे हुए हैं, यदि परमपिता परमात्मा के गुण, कर्म और स्वभाव को धारण नहीं करेंगे तो 'धर्म' की स्थापना कैसे होगी ? हम अपनी दिनचर्या में यदि और किसी प्रकार का चार्ज नहीं भी रख सकते तो कम-से-कम यह चार्ज तो रखें कि हमने कितनों को सुख दिया, सन्तुष्ट किया और सान्त्वना दी ? क्या हमने किसी पर किसी भी प्रकार से गुप्त दया की ? क्या हमने किसी को दुःख वेदना, पीड़ा या पछाड़ तो नहीं दी ? यदि दी तो हम पर मार पड़ेगी। भगवान ने कह दिया कि 'दुःख दोगे तो दुःखी होकर मरोगे।' क्या विश्व के इतिहास में ऐसा कोई व्यक्ति हुआ है जिसने निर्दयता से व्यवहार किया हो और उस पर ऊपर वाले की दया हुई हो ? परमात्मा की दया के बिना तो हम डूब जायेंगे, हमें तारेगा कौन और पार उतारेगा कौन ? अतः मन्त्र यह कि 'कर दया तो होगी तुझ पर दया।' दया का एक रूप 'क्षमा' है। किसी से कोई छोटी-छोटी भूल हो भी गयी हो तो उसे समझा दो, सावधान कर दो, भविष्य के लिये चेतावनी दे दो या आँख दिखा दो या बड़ी भूल हुई तो उससे बोल-चाल, लेन-देन, आना-जाना कम कर दो या बन्द कर दो परन्तु उससे दुश्मनी करना, उसे नीचा दिखाना, उसे पीड़ित करना तो अपने लिये सूली तैयार करना है अथवा फाँसी का रास्ता बनाना है। क्षमा करने से अपना ही मन हल्का होगा, दूसरे को भी निकट आने का साहस होगा और तीसरे के पास भी रिपोर्ट नहीं जायेगी। क्षमा करना बड़प्पन है, वीरता है, किसी आत्मा के उद्धार की एक विधि है। सरकार ने भी कई डाकुओं को क्षमा देकर लूट-मार के धन्धे-डण्डे से छुड़ाया था, क्योंकि वे डाकू भी अब उन काले कारनामों को छोड़ना चाहते थे।

दया करने का यह भाव भी नहीं है कि व्यक्ति बार-बार पाप-अपराध करता रहे और हम क्षमा करते रहें चाहे इनके परिणामस्वरूप अनेकों को वह कष्ट पहुँचाता रहे। ऐसे व्यक्ति पर तो रोक लगानी पड़ती है अथवा उसे अहसास कराने के लिये विधि-विधान के अनुसार दण्डित भी करना पड़ता है। परन्तु इन सबके पीछे भी दया ही का रहना चाहिये, अर्थात् यह

जीवन की रक्षा करने वाली दो बातें हैं - एक अन्न, दूसरा संग



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

हमें पढ़ाने वाला एक ही बाप, टीचर और सतगुरु है। इसलिये हम तीनों रूप से बाप को याद करते हैं। जब एक तीनों हैं तो हम भी सवेरे से लेकर रात तक तीनों रूप से याद करते हैं। बाप के साथ प्यार है क्योंकि अच्छी पालना देता है। टीचर का भी बहुत रिगार्ड है क्योंकि लायक बनाता है। सतगुरु फिर हमको साथ ले जाने के लिये पावन बना रहा है। कोई घड़ी सारे दिन में ऐसी नहीं आ सकती जो तीनों याद नहीं रहे। संगमयुग की ये घड़ियाँ हैं ही बाबा को तीन रूप से याद करने के लिये। हमारी पढ़ाई का आधार ही यह है। हमें सिर्फ बैठकर नोट्स नहीं लेना है, लेकिन जो बाबा सुनाता है उसे शान्त में बैठकर मनन करना है, अमल में लाना है। बाबा जो सुना रहा है उसे चेक करें कि यह मेरी लाइफ में है ?

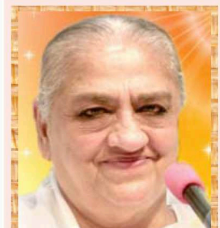
समय अनुसार हमारी ब्राह्मण लाइफ भी हो, राजयोगी लाइफ भी हो। हम बाबा के बने हैं तो मर्यादाओं को पालन करके अच्छे बन जायें। राजयोग के द्वारा मन-कर्मन्द्रिय शान्त हो जाती हैं तो अच्छे बनते जाते हैं। सारा दिन धुन लगी रहे कि मुझे ऐसा सच्चा ब्राह्मण बनना है। एक बार पक्का ब्राह्मण बन गये तो फिर अशुद्ध आहार-विहार, बोल-चाल से छूट जाते हैं। वाणी और सोचने का तरीका बदल जाता है। उसे लक्ष्य रहता कि ब्राह्मण में भी श्रेष्ठ बनें, जहाँ

से उन्नति हो उनका संग करें। ब्राह्मणों को अन्न और संग का असर होता है। इसलिये ब्रह्मा भोजन की इतनी महिमा है। बाबा के भण्डारे से जो ब्रह्मा भोजन मिलता है, बाबा को भोग लगाकर खाने की हमारी जो सिस्टम है, इससे हमारी ब्राह्मण लाइफ की रक्षा है। बाबा के कई बच्चे हैं, बिल्कुल पक्के हैं, अच्छे रहे हैं, कभी अन्न की परहेज छोड़ी नहीं है। याद में रहकर खाने के अभ्यासी हो गये हैं जिसको पकाने का अभ्यास ही नहीं था, अपने हाथ से पका कर खाने में उनको आनन्द आता है, अच्छा लगता है। बाकी भी जिनको बाबा के भोग ऑफर करने की आदत पड़ जाती है वे बाबा को भोग ऑफर किये बगैर खा नहीं सकते। ये है याद। बाबा की याद में पकाऊं, फिर भोग ऑफर करूँ, फिर खिलाऊं, खाऊं, ये भी याद को पक्का करने की अच्छी साधना है। दूसरा है संग। ऐसी कम्पनी में रहूँ या ऐसी कम्पनी दूँ जो याद मजबूत हो। आया हुआ विघ्न भी याद से खत्म हो जाये। ऐसी कम्पनी न हो जो बाबासे योग तोड़ दे। जैसे अन्न का मन पर असर होता, वैसे संग का रंग लग जाता है। तो ब्राह्मण लाइफ में-अन्न और संग, यह दो बातें हमारे जीवन की रक्षा करने वाली हैं। कभी इस बात में हम गफलत नहीं करें। दूसरा, ब्राह्मण लाइफ के अन्दर मैं सच्चा ब्राह्मण या राजयोगी हूँ। सुस्ती, अलबेलापन और बहाना-अगर ये तीन अवगुण हैं तो कभी सच्चे राजयोगी नहीं बन सकते। कभी भी बहाना नहीं बनायें। सुस्ती और अलबेलापन हमको बहाना बनाना सिखाते है। सुस्ती होशियार है। कैसे हम बहाना बनाकर

अलबेले होकर टाइम बरबाद कर देते हैं। जिनके पास बहाना है वो सच्चे पुरुषार्थी नहीं हैं। उनको बाबा के प्रेम और रिगार्ड वाली याद आ नहीं सकती, खींच हो नहीं सकती। तो ध्यान रखना चाहिये कि किसी भी कारण से याद और सेवा में बहाना नहीं बनायें। अगर कोई कारण भी होगा तो सच्ची दिल से याद करने वाले का कारण चला जायेगा। कइयों का मिसाल होता है- भले तन कैसा भी होगा परन्तु लगन है कि मुझे बाबा को याद करना है, सेवा करना है तो तन भी ठीक हो जाता है। धन नहीं होगा लेकिन लगन होगी तो आ जायेगा।

किसी भी प्लैन को प्रैक्टिकल में लाना हो तो क्या करो ? बुद्धि को प्लेन रखो। जो बुद्धि बहुत चलाने वाले हैं वे प्लेन को प्रैक्टिकल में नहीं लाते। सोचते बहुत हैं। सेवा दिन प्रतिदिन बढ़ती जायेगी, कम होने वाली नहीं है। दुनिया की हर आत्मा को मैसज कैसे मिलेगा ? मैसज देने वाले भी ऐसे-ऐसे बच्चे पैदा हो रहे हैं, समझते हैं हम लेट आये हैं, हमको जल्दी करना है। पुराने थके हुए हैं, औरों को आगे बढ़ते देख सहन नहीं कर सकते, दिल सुस्त है। कोई भी सेवा करता है, हम खुश तो रहें, बाबा की सेवा हो रही है। बाबा की सेवा समझें तो सहज आगे बढ़ सकते हैं। आगे बढ़ने में कई प्रकार की सेवा का चांस मिल जाता है। मैं आगे बढ़ूँ, ऐसा सोचने वाला कभी आगे नहीं बढ़ सकता। मैं पन के नाम-रूप का भान छूटता जाये, निकलता जाये। सेवा में मैं पन नहीं है तो सेवा अपने आप फैलती जाती है।

अतिन्द्रिय सुख की अनुभूति के लिए एकाग्रता की शक्ति बढ़ाओ



दादी दूष्यन्ती, अति. मुख्य प्रशासिका

बाबा के बच्चों वनी विशेषता है कि जो सुनते हैं उसे स्वयं में धारण कर वैया बनने का पुरुषार्थ करते हैं। दुनिया वाले सुनते हैं लेकिन बनते नहीं। तो सुनने का अर्थ है बनना। क्योंकि बाबा ने हम सभी को लक्ष्य दिया है कि आपको मनुष्य से देवता बनना है। जैसे बाबा मिसाल देते हैं कि जो चात्रक होता है वह बूंद को धारण करता है या समुद्र में जो सीप होती है वो बूंद को धारण करके मोती बना देती है। जिनकी बुद्धि में बनने का लक्ष्य नहीं है वे सुन-सुनकर थक भी जाते हैं। कहते हैं यह तो बहुत बार सुना है, वही क्लासेस फिर सुन रहे हैं। मुरली के लिए भी कह देते हैं कि यह मुरली तो कितनी बार रिवाईज हो गई है, हमारी बुद्धि में याद हो गई है। कह देते हैं सुन-सुनकर पहले ही हम बहुत थके हुए हैं। द्वापर से शास्त्र सुने, कथायें सुनी, कहानियाँ सुनी... सुनते-सुनते बने नहीं इसलिए थक गए। लेकिन यहां का सुनना, सुनना नहीं है। यहां का सुनना माना बनना।

हम लोगों की लौकिक जीवन समाप्त हुई,

अभी हम अलौकिक जीवन में हैं। इस अलौकिक जीवन में जब भी कोई विशेष खुशी के मौके आते हैं तो सारा दिन कितना भी काम करो लेकिन थकावट नहीं होगी। क्योंकि जहां खुशी व प्राप्ति होती है वहां कोई भी थकावट नहीं होती।

आजकल रवांस पर कोई भरोसा नहीं है इसलिए बाबा कहते हैं एवररेडी रहो और एवररेडी वही रह सकता है जिसका सचमुच देह से भी मोह नहीं हो। नष्टोमोहा माना पहले अपने शरीर से भी मोह नहीं हो। बेगर माना जिसे अपना घर भी नहीं हो। आत्मा का पहला घर तो शरीर ही है ना ? तो सबसे मुश्किल है इस शरीर से बेगर बनना। तो पहले देह के घर से न्यारे रहो, इसमें ममता न हो। यदि इससे बेगर नहीं बनेंगे तो योग में बैठने समय थोड़ा समय अशरीरी स्थिति का अनुभव होगा, खुशी व आनंद की अनुभूति होगी। फिर काम-काज में जायेंगे, परिवार के कनेक्शन में आएंगे, किसी के सम्पर्क में आएंगे तो वह नशा थोड़ा कम हो जाएगा। लेकिन बाबा तो कहते हैं काम-काज करते भी शरीर से न्यारे होकर शरीर को चलाओ, शरीर से न्यारा माना शरीर से अलग नहीं, लेकिन शरीर के भान से अलग। मैं शरीर नहीं हूँ। शरीर का भान है मैं-पन। यह मैं-पन भूलना माना शरीर का भान भूलना। शरीर के

भान के कारण ही माया आती है। तो माया का दरवाजा देहभान ही है। जैसे गुणों का फाउण्डेशन है अंतर्मुखता, ऐसे विकारों का फाउण्डेशन है देहभान।

योगी जीवन के लिए सबसे जरूरी है- एकाग्रता की शक्ति। एकाग्रता के बिना हमारी योगी जीवन हो ही नहीं सकती। एकाग्रता का अर्थ ही है कि बुद्धि एक ठिकाने लग जाये, टिक जाये। मानो अभी बुद्धि में सुनने का काम चल रहा है तो बुद्धि यहाँ-वहाँ नहीं जाए। नहीं तो बैठे क्लास में हैं और दिल्ली, बाम्बे कहीं न कहीं घूम कर आएंगे। इसको एकाग्रता की कमी कहेंगे। यदि एकाग्रता की शक्ति है और हमने दिल से 'मीठा बाबा' कहा तो बुद्धि एक में टिक जाएगी। जब मैं आर्डर दूँगी तो हमारी बुद्धि और काम करेगी। जैसे हाथ हैं, यह हाथ हमारे वश में हैं, हम हाथ को यहाँ नहीं, यहाँ रखना चाहते हैं तो यह हमारे आर्डर पर है। तो जैसे यह शरीर की कर्मद्रियाँ हाथ, कान, नाक, वश में हैं, कोई-कोई के वश में नहीं हैं, धोखा देते हैं लेकिन स्थूल कर्मद्रियाँ मैजिस्ट्री के कन्ट्रोल में आ गए हैं। तो जैसे ये कर्मद्रियाँ हैं वैसे मन-बुद्धि-संस्कार यह भी आपकी सूक्ष्म शक्तियाँ हैं, इन पर भी पूरा अधिकार हो। ये आत्मा की शक्ति हैं, यानी मेरी शक्ति है। तो ये मेरे आर्डर में चलने वाली हैं।